फी तहक़ीक़-ए-नसब-उन-नूर ﷺ

बफेज़े रूहानी:
हज़रत अल्लामा बेहरूल उलूम
सय्यद मोहम्मद रज़ाउल हक़ आमीर अलीमी

तालीफ:
मोहम्मद ज़हीन क़ादरी

तरतीब:
सैय्यद मोहम्मद जाबिर क़ादरी आमीरी

ख़ानक़ाह-ए-हैदरी

बरकात-उस-सादात

फी तह्क़ीक़-ए-नसब-उन-नूर

बफ़ेज़े रूहानीः
हज़रत अल्लामा बेहरूल उलूम
सय्यद मोहम्मद रज़ाउल हक़ आमीर अलीमी

तालीफ़ः
मोहम्मद ज़हीन क़ादरी

तरतीबः
सैय्यद मोहम्मद जाबिर क़ादरी आमीरी

ख़ानक़ाह -ए- हैदरी

سُورَةُ الكَوثَرِ مَكِّيَّةٌ

إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ①

तरजुमा:- ऐ मेहबूब बेशक हम ने तुम्हें बेशुमार खुबियाँ अता फरमाई।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर, तेरा सब घराना नूर का

बरकात-उस-सादात

फी तहकी़क़-ए- नसब-उन-नूर

तालीफ

मोहम्मद ज़हीन का़दरी

तरतीब

सय्यद मोहम्मद जाबिर का़दरी आमीरी

नाशिर : ख़ानकाहे हैदरी देहली

तफसीलात

नाम किताब	:	**बरकात-उस-सादात** फी तहकी़क़-ए-नसब-उन-नूर
मुसन्निफ	:	मोहम्मद ज़हीन
तरतीब	:	सयैद मुहम्मद जाबिर कादरी आमिरी
तसदीक़	:	मोलाना सैयद शाह सरदार अहमद सज्जादा नशीन खानकाहे हैदरी
इमदाद	:	सैयद फराज़ कादरी
तादाद	:	1100
सनइशाअत	:	2016
फोन न०	:	9968423172, 9136268400
कम्पोज़िंग	:	**क्रिऐटिव आर्टस,** 9999226181 दिल्ली-53
प्रिंटिंग	:	**शादाब बुक डिपो,** 9716974210 दिल्ली-53
मिलने का पता		मदरसा शहीदे आज़म (खानकाहे हेदरी) (गली न० 3, बजरंग बली मौहल्ला, दिल्ली-53)

अरज़े मोअल्लिफ

तमाम तारीफे अल्लाह के लिए जिसने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुल आलम के लिए रहमत बनाकर भेजा। अल्लाह तआला बेशुमार दरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फरमाए नबी और आले नबी पर।

कुछ हज़रात अपनी कम ईल्मी की बिना पर यह कहते हैं की आले रसूल की तादाद कम है अवाम तो अवाम कुछ एहले ईल्म हज़रात यही सोच रखते हैं। किताब लिखने का पहला मक़सद तो यही है की उनकी इस गलतफहमी को दूर किया जाए। दूसरा मक़सद यह है की हर सय्यद कहलाने वाले से सनद सयादत माँगने और न दिखाने पर बुरा भला कहने और सय्यद न मानना लोगों में आम हो गया है। इसके मुताअल्लिक़ हुक्म शरई बताया जाए। तिसरा मक़सद यह है की कुछ हज़रात सादाते किराम की इज़्ज़त व अज़मत आम लोगों की सी समझते हैं। ऐसे हज़रात की रहनुमाई के लिए किताबे हाज़ा में दलाइल रकम किय गए हैं।

नोटः- (1) जो सहीउन नसब सय्यद नहीं हैं और जानते भी हैं लेकिन सय्यद बनकर रहते हैं ऐसे लोगों की हम मज़म्मत करते हैं।

(2) हमारी दुसरी कुतुब का मुताअला करना न भुले।

- मिलाद-उन-नबी
- पैग़ाम-ए-हक़

मौहम्मद ज़हीन क़ादरी

अल्लाह फरमाता हैः

قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى

ऐ महबूब! फरमा दीजिए मैं तुम से कुछ नहीं मांगता, इतना ज़रूर कहता हूँ कि मेरे क़रीबों से मुहब्बत करो।

हमारे रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है किः

चार शख़्स ऐसे हैं जिन की में क़यामत के दिन में शफाअत करूंगा अगर्चे वह तमाम एहले ज़मीन के गुनाहों जितने गुनाह लेकर आऐं (1) मेरी आल की तक्रीम करने वाला (2) उनकी हाजात पूरी करने वाला (3) उनके कामों में दौड़ धूप करने वाला (4) ज़बान और दिल से उनको चाहने वाला। (अल् सवाईक़ मेहरक़ा)

मज़ीद इर्शाद फरमाते हैंः

मुझसे मुहब्बत करो अल्लाह की वजह से और मेरे एहले बैत से मुहब्बत करो मेरी मुहब्बत की वजह से। (किताबुल शिफा)

आले अतहार की वजह से दोज़ख़ से रिहाई का परवाना और अज़ाबे हश्र से अमान की दलील है.... अल्लाह अल्लाह सब ईमान वालों ने अपने महबूब की औलाद को अपनी औलाद से महबूब तर रखा।

सैयदना सिद्दीक़ अकबर फरमाते हैं किः-

खुदा की क़सम में अपने क़रीबों से ज़्यादा हुज़ूर के एहले बैत को अज़ीज़ रखता हूँ। (सहीह बुख़ारी)

सैयदना फारूक़ आज़म ؓ ने अपने लख़्ते जिगर अब्दुल्लाह ؓ की निस्बत हसनैन करीमेन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को दोगुना माले ग़नीमत दिया (अल् रियाज़ुल नज़रा)

और एक दफा इमाम हसन ؓ से फरमाया किः

अल्लाह के बाद तुम्हारी बरकत से हमें इज़्ज़त व अज़मत अता हुई।

सैयदना अबु हुरैरा ﷺ ने इमाम हुसैन के पाए अक्दस अपने कपड़े से पोंछे और कहा कि:-

अल्लाह की क़सम! जितने आपके फज़ाइल में जानता हूँ लोग जान लें तो आपको कंधों पर उठाए फिरें। (इज़हारुल सआदत)

इमाम शाफई ﷺ फरमाते हैं कि:

एहले बैत! तुम्हारी मुहब्बत को अल्लाह ने कुरआन में फर्ज़ क़रार दिया है। हमारी शान के लिए यही काफी है कि जिसने तुम पर दुरूद न पढ़ा इसकी नमाज़ नहीं होगी।

हज़रत इमाम आज़म ﷺ अफराद आले नबुव्वत के एहतराम में एक सैयद ज़ादे की ताज़ीम के लिए आपना बार-बार खड़ा होना बाईस सआदत समझते।

(1) एक दिन हुज़ूर ﷺ ने हज़रते अब्बास ﷺ से फ़रमाया ऐ चचा! कल सुबह अपने बच्चों के साथ मेरे पास आना चुनान्चे वह सब आए और हुज़ूर ﷺ ने इन सब को अपनी चादर मुबारक में ढाँप लिया और फरमाया यह मेरे चचा हैं जो बमंज़िला बाप हैं और यह मेरी एहल है और खुदा इनको आग से इस तरह छुपाए रख जिस तरह मैंने इनको अपनी चादर में छुपा लिया है इस पर घर के दर व दीवार ने आमीन आमीन कहा। (शिफा शरीफ़र जुज़ सानी स. 31 इलमिया बैरूत)

(2) हुज़ूर ﷺ हज़रते उसामा बिन ज़ैद, और हज़रते हसन ﷺ के हाथ पकड़ते और दुआ मांगते ऐ खुदा मैं इन दोनों को महबूब रखता हूँ तू भी इन्हें महबूब रख। (शिफ़ा शरीफ)

(3) शिफ़ा शरीफ में है कि हुज़ूर ﷺ की ताज़ीम व तौक़ीर में से

यह भी है कि आपकी आल व औलाद और अज़वाज पाक उम्महातुल मोमिनीन की ताज़ीम व तोक़ीर की जाए, क्योंकि नबी करीम ﷺ ने इसकी तरग़ीब व तलक़ीन फ़रमाई है, और इसी पर सल्फ़ सालेहीन का अमल है।

सैयदना सिद्दीक़ अकबर ﷺ ने फ़रमाया कि हुज़ूर की मुहब्बत व तकरीम आपकी एहले बैत में करो।

(4) हज़रते ज़ैद इब्ने अरक़म ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया मैं तुम को अपने एहले बैत के बारे में अल्लाह की क़सम देता हूँ। यह तीन मर्तबा फ़रमाया (यानी एहले बैत की ताज़ीम व तौक़ीर करो) (शिफ़ा शरीफ़ जुज़ सानी स. 30 इलमिया बैरूत)

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: "आले नबी की मारफत दोज़ख़ से निजात और आले नबी से मुहब्बत पुल-सिरात पर गुज़रने में आसानी और आले नबी की विलायत का इक़रार अज़ाबे इलाही से हिफ़ाज़त है।" (शिफा शरीफ)

(5) और फ़रमाया कुरैश को आगे बढ़ाओ तुम उनसे आगे न बढ़ो।

(6) "हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा ﷺ से फ़रमाया: अल्लाह तआला तुम्हें और तुम्हारी औलाद को आग का अज़ाब नहीं देगा।" इस हदीस को इमाम तिबरानी ने बयान किया।

(7) "हज़रत अली बिन अबी तालीब बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अली! बेशक अल्लाह तआला ने तुझे और तेरी औलाद को और तेरे घर वालों को और तेरे मददगारों को और तेरे मददगारों के चाहने वाले को बख़्श दिया है पस तुझे यह खुशख़बरी मुबारक हो।" इस हदीस को इमाम देलमी ने रिवायत किया है।

(8) हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया जिसने कुरैश की बेइज़्ज़ती की अल्लाह तआला उसकी बेइज़्ज़ती करे। (शिफा शरीफ़)

(9) मुस्लिम शरीफ़ अब्दुल मुत्तलिब इब्ने रबीआ से रिवायत की:

यह सदके लोगों के मेल हैं यह सदके न मुहम्मद ﷺ को हलाल हैं न हुज़ूर ﷺ की औलाद के लिए।

(10) हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी फरमाते हैं, यह बरकतें सैयद हज़रात को सिर्फ इसलिए हासिल हैं कि वह नबी करीम ﷺ की नसल शरीफ़ से हैं ग़ैर सैयद ख़्वाह कितना ही परहेज़गार हो, उसे यह ख़ूबियाँ हासिल नहीं हो सकतीं, मालूम हुआ कि ख़ानदान मुस्तुफ़ा ﷺ अशरफ है।" (अल्कलामुल मक़्बूल स. 8)

मेरे बाद ख़्याल रखना, किसका?

(1) तिबरानी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत की है वह फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने जो आख़री बात अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाई वह यह थी मेरे बाद मेरे एहले बैत का ख़्याल रखना। (तिबरानी)

(2) "हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: तुम में से बेहतरीन वह है जो मेरे बाद मेरी एहले बेत के लिए बेहतरीन है।" इस हदीस को इमाम हाकिम ने बयान किया है।

(3) इमामे तिबरानी मरफुअन रिवायत करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने हज़रते अब्दुल मुत्तलिब की औलाद पर कोई ऐहसान किया और उसने उसका बदला नहीं लिया, कल क़यामत के दिन जब वह मुझसे मिलेगा तो मैं उसे बदला दूंगा।"

(4) हज़रते शाफ़े महशर ﷺ ने फ़रमाया:

"क़यामत के दिन में चार क़िस्म के लोगों की शफ़ाअत करूंगा।"

☆ मेरी औलाद की इज़्ज़त करने वाला

☆ उनकी ज़रूरतों को पूरा करने वाला

☆ वह शख़्स जो उनके उमूर के लिए कोशिश करे, जब उन्हें इसकी ज़रूरत पेश आए।

☆ दिल और ज़बान से उनकी मुहब्बत करने वाला। (बरकाते आले रसूल, इमाम नब्हानी)

(5) इब्ने नज्जार अपनी तारीख में हज़रते हसन बिन अली رضي الله عنه से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"हर शय की एक बुनियाद होती है और इस्लाम की बुनियाद सहाबा और एहले बैत की मुहब्बत है।" (बरकात आले रसूल स. 246)

(6) "अल्लाह तआला की ख़ातिर तीन इज़्ज़तें हैं जिसने उनकी हिफाज़त की, उसने अपने दीन व दुनिया के मामले की हिफ़ाज़त की, जिसने उन्हें ज़ाए किया अल्लाह तआला उसकी किसी चीज़ की हिफ़ाज़त नहीं फ़रमाएगा, सहाबा ने अर्ज़ किया वह क्या हैं? फ़रमाया इस्लाम की इज़्ज़त और मेरे रिश्तेदारों की इज़्ज़त।" (बरकात आले रसूल स. 246)

(7) इमामे तिबरानी हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रावी हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"किसी आदमी के क़दम चलने से आजिज़ नहीं होते (यानी मौत के वक़्त)

यहाँ तक कि इससे चार चीज़ों के बारे में पूछा जाता है:

☆ तूने अपनी उम्र किस काम में सर्फ की?

☆ तूने अपने जिस्म को किस काम में इस्तेमाल किया?
☆ तूने अपना माल कहाँ से हासिल किया और कहाँ ख़र्च किया?
☆ और हम एहले बैत की मुहब्बत के बारे में पूछा जाता है।

(8) इमामे देलमी हज़रते अली मुरतज़ा ﷺ से मरवी करते हैं:-

"तुम में से पुल सरात पर बहुत ज़्यादा साबित क़दम वह होगा जिसे मेरे एहले बैत और मेरे असहाब से शदीद मुहब्बत होगी।"

(9) सैयदी मुहम्मद फ़ारसी फ़रमाते हैं कि मैं मदीना तैयबा के बाज़ हुसैनी सादात को नापसंद रखता था क्योंकि बज़ाहिर उनके अफ़आल सुन्नत के मुख़ालिफ थे, ख़्वाब में नबी करीम ﷺ ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया ऐ फ़लाँ! क्या बात है मैं देखता हूँ कि तुम मेरी औलाद से बुग़ज़ रखते हो, मैंने अर्ज़ किया ख़ुदा की पनाह! या रसूलुल्लाह! मैं तो उनके ख़िलाफ़े सुन्नत अफ़आल को नापसंद रखता हूँ फ़रमाया: क्या यह फ़िक़ही मसला नहीं है कि नाफ़रमान औलाद नसब से अलग नहीं होती है? मैंने अर्ज़ किया हाँ या रसूलुल्लाह ﷺ! फ़रमाया: यह न फ़रमान औलाद है, जब मैं बैदार हुआ तो इनमें से जिससे भी मिलता उसकी बेहद ताज़ीम करता। (बरकाते आले रसूल स. 259)

(10) "अपनी औलाद को तीन ख़सलतें सिखाओ, अपने नबी ﷺ की मुहब्बत, आपके एहले बैत की मुहब्बत और क़ुरआन मजीद पढ़ना।" (बरकाते आले रसूल स. 246)

खड़े होकर एहले बैत का इस्तक़बाल करें

(1) हज़रत उम्मे सलमा ﷺ से रिवायत है कि एक बार सरकार मदीना ﷺ मेरे यहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे कि ख़ादिमा ने हज़रत अली और सय्यदे आलम (ख़ातूने जन्नत) के आने की ख़बर दी तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

"खड़े होकर मेरे एहले बैत का इस्तक़बाल करो।"

जब हज़रत अली और सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा अपने दोनों शहज़ादों हसन व हुसैन के साथ आ चुके थे तो आपने दोनों बच्चों को गोद में ले लिया और एक हाथ से हज़रत अली और दूसरे से फ़ातिमा को पकड़ कर चूमा। ﷺ (مسند احمد اتحاف السائل بما لفاطمة من المناقب و الفضائل صفحه ٨٣)

(2) इब्ने असाकर हज़रत अनस ﷺ से रिवायत की उन्होंने कहा कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

"कोई शख़्स अपनी जगह से न खड़ा होगा मगर इमाम हसन या इमाम हुसैन या इन दोनों की औलाद के लिए।"(ख़साइस कुबरा जि. 2, स. 566)

(3) नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

"हर शख़्स अपने भाई के लिए अपनी जगह से (एहतरामन) उठता है मगर बनी हाशिम किसी के लिए नहीं खड़े होंगे।" (ख़साइस कुबरा जि. 2, स. 566)

ख़िदमत का ज़ामिन कौन?

(1) हुज़ूर पुर नूर सैयद आलम ﷺ ने फ़रमाया:

जो शख़्स मेरे एहले बैत से नेकी करेगी, वह क़यमात के दिन उसका अज्र 100 गुना ज़्यादा पाएगा। मैं (मुहम्मद ﷺ) क़यामत के दिन इस नेकी का ज़ामिन हूंगा।"

(शर्फ नबी ﷺ, शैख़ अबु सईद अब्दबुल मलिक बिन उसमान नीशापुरी (स. 407 हि.) स. 239

जो हज़रात सादाते किराम को ख़ुशी के मोक़े पर नज़र अंदाज़ करते हैं, वह इन रिवायात करीमा से सबक़ हासिल करें।

(2) रद्दुल मुख़्तार बाब गुस्ल मय्यत में बहवाला हदीस शरीफ़ फ़रमायाः

"کل سبب و نسب منقطع الاسببی ونسبی"

यानी क़यामत के दिन हर नसबी और सुसराली रिश्ते कट जाऐंगे और काम न आऐंगे मगर मेरा नसब और सुसराली रिश्ता काम आएगा।

फिर फरमाया कि हज़रते उमर ﷺ ने हज़रते कुलसुम बिन्ते फ़ातिमा ज़ेहरा ﷺ से इस हदीस की बिना पर निकाह किया ताकि हज़रते अली शेरे खुदा से आपका सुसराली रिश्ता क़ायम हो जाए। (रुद्दुल मुख़्तार किताबुल सलात बाब सलातुल जनाज़ा)

हुज़ूर अक़दस ﷺ से क़राबत मुनक़ता नहीं होगी:

(1) सरकारे दो आलम ﷺ फ़रमाते हैं:

"کل سبب و نسب منقطع یوم القیمة الاسببی ونسبی"

हर इलाक़े और रिश्ता रोज़े क़यामत क़ता हो जाएगा मगर मेरा इलाक़ा और रिश्ता (मुनक़ता नहीं होगा)

(المعجم الکبیرحدیث ۲۶۳۳)

(2) ''हज़रत अब्दुल रहमान अबी लैला ﷺ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः कोई बंदा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके एहले ख़ाना से महबूब तर न हो जाऊँ और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से बढ़ कर महबूब न हो जाए और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से महबूब तर न हो जाए।'' इसे इमाम तिबरानी और इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है।

ताज़ीम, एहले बैत का हक़ है

नासिर इस्लाम हज़रत ख़्वाजा नसिरुद्दीन उबैदुल्लाह एहरार

नक़्शबंदी क़ुद्दस सिर्रहू (895 हि.) एक रोज़ सादाते किराम की तौक़ीर व ताज़ीम के बारे में फ़रमा रहे थे कि जिस बस्ती (गोठ) सादात किराम रहते हों मैं उसमें रहना नहीं चाहता क्योंकि उनकी बुज़ुर्गी और शर्फ ज़्यादा है। मैं उनकी ताज़ीम का हक़ बजा नहीं ला सकता। (तज़किरा मशाईख़ नक़्शबंदिया)(ज़ैनुल बरकात)

सादात की ताज़ीम के लिए क़याम

ख़्वाजा एहरार क़ुद्दस सिर्रहू रिवायत फ़रमाते हैं कि एक रोज़ इमाम आज़म सिराज उम्मत सैयदना इमाम अबु हनीफ़ा ﷺ की अपनी मजलिस में कई बार उठे किसी को इसका सबब मालूम न हुआ। आख़िरकार हज़रत इमाम से एक शागिर्द ने मालूम किया।

हज़रत इमाम आज़म ﷺ ने फ़रमायाः सादाते किराम का एक साहबज़ादा लड़कों के साथ मदरसा के सहन में खेल रहे हैं। वह साहबज़ादा जब इस दर्स के क़रीब आता है और उस पर मेरी नज़र पड़ती है तो मैं उसकी ताज़ीम के लिए उठता हूँ।'' (ज़ैनुल बरकात)

सय्यदों का एहतराम:

(1) सय्यदी अब्दुल वहाब शोरानी में फ़रमाते हैं: ''मुझ पर अल्लाह तआला के एहसानात में से एक यह है कि मैं सादाते किराम की बेहद ताज़ीम करता हूँ अगर्चे उनके नसब में तअन करते हों।

मैं इस ताज़ीम को अपने ऊपर उनका हक़ तसव्वुर करता हूँ, इसी तरह उलमा व औलिया की औलाद की ताज़ीम शरई तरीक़े से करता हूँ, अगर्चे मुत्तक़ी न हों, फिर मैं सादात की क़म अज़ कम इतनी ताज़ीम व तकरीम करता हूँ जितनी मिस्र के किसी भी नाइब या लश्कर के क़ाज़ी की हो सकती है।'' (अल् शरफुल मोबिद)

(2) हज़रत अबु राफेअ़ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه से फ़रमाया: बेशक पहले चार अशख़ास जो जन्नत में दाख़िल होंगे वह मैं, तुम, हसन और हुसैन होंगे और हमारी औलाद हमारे पीछे होगी (यानी हमारे बाद वह दाख़िल होगी) और हमारी बीवियाँ हमारी औलाद के पीछे होंगी (यानी उनके बाद जन्नत में दाख़िल होंगी) और हमारे चाहने वाले (हमारे मददगार) हमारी दाएं जानिब और बाएं जानिब होंगे।'' इस हदीस को इमाम तिबरानी ने रिवायत किया है।

कुतुब औलिया, सादात में से होता है

जब ख़िलाफ़त ज़ाहिरा में शान ममलिकत व सल्तनत पैदा हुई तो कुदरत ने आले अतहार को इससे बचाया और उसके ऐवज़ ''ख़िलाफ़ते बातिना'' अता फ़रमाई।

हज़रात सूफ़ियाए किराम का एक गिरोह जज़्म करता है कि हर ज़माने में ''कुतुब औलिया'' आले रसूल ﷺ (सादात किराम) ही में से होंगे। (सवानेह करबला स. 50 सदरुल फाज़िल, उस्तादुल कुल, नईम मिल्लत, अल्लामा सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी कुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़)

ख़ातून जन्नत को अपनी औलाद अज़ीज़ है

(1) इमाम इब्ने हज्र मक्की हैतमी (974 हि.) तक़ीउद्दीन फारसी से रिवायत करते हैं उन्होंने बाज़ अइमा किराम से रिवायत की कि वह सादात किराम की बहुत ताज़ीम किया करते थे। उनसे इसका सबब पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया:

सादाते किराम में एक शख़्स था जिसे मुतैर कहा जाता था वह अक्सर लहव़ व लअ़ब में मसरूफ रहता था जब वह फौत हुआ

तो उस वक़्त के आलिमे दीन ने उसका जनाज़ा नहीं पढ़ा तो उन्होंने ख़्वाब में नबी करीम ﷺ की ज़ियारत की आपके साथ हज़रत सैयदा फ़ातिमा ज़ेहरा رضي الله عنها थीं। आलिम ने हज़रत फातिमा ज़ेहरा से दरख़्वास्त की के मुझ पर नज़रे रहमत फ़रमाऐं तो हज़रत ख़ातून जन्नत उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं हुईं, उस पर अताब फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया:

''क्या हमारा मुक़ाम मुतैर के लिए किफायत नहीं कर सकता?''

बेशक कर सकता है। गुनहगार सादात के ज़ख़्मों पर आप मर्हम पट्टी नहीं करेंगी तो और कौन करेगा। हर एक को अपनी औलाद प्यारी होती है बेशक आपको भी अपनी आले अज़ीज़ है। गुनाह से नसब नहीं टूटता। जैसे भी हैं आपके हैं।

''जिसका जो होता है रखता है उसी से निस्बत''

(2) हज़रत इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه फ़रमाते हैं, नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

''मैंने अपने रब करीम से दुआ की कि मेरे एहले बैत में से किसी को आग में दाख़िल न फ़रमाए तो उसने मेरी दुआ कुबूल फरमा ली।'' (बरकाते आले रसूल)

तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर लगी है

आरिफ बिल्लाह इमाम अब्दुल वहाब शोअ़रानी कुद्दस सिर्रहू फरमाते हैं:

सैयद शरीफ ने हज़रत ख़िताब رضي الله عنه की ख़ान्क़ाह में बयान किया कि काशिफुल जीरह ने एक सैयद को मारा तो उसे उसी रात ख़्वाब में रसूले अकरम ﷺ की इस हाल में ज़ियारत हुई कि आप

इससे ऐराज़ फरमा रहे हैं, उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ! मेरा क्या गुनाह है?

फ़रमायाः तू मुझे मारता है हालांकि मैं क़यामत के दिन तेरा शफीअ हूँ। उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे याद नहीं कि मैंने आपको मारा हो। आपने फ़रमायाः क्या तूने मेरी औलाद को नहीं मारा? उसने अर्ज़ किया हाँ।

आपने फ़रमायाः तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर लगी है, फिर आपने अपनी कलाई निकाल कर दिखाई जिस पर वरम था जैसे कि शहद की मक्खी ने डंक मारा हो।''

हम अल्लाह तआला से आफियत का सवाल करते हैं। (ज़ैनुल बरकात)

हुज़ूरे पाक ﷺ से इश्क़ की अलामत

हज़रत शैख़ अमानुल्लाह अब्दुल मुल्क पानी पती कुद्दस सिर्रहू (997 हि.) ने फ़रमायाः

दुरवैशी मेरे नज़दीक दो चीज़ों में है, एक (1) खुश अख़लाक़ी और (2) मुहब्बत एहले बैत। मुहब्बत का कामिल दर्जा यह है कि महबूब के मुतअल्लिक़ीन से भी मुहब्बत की जाए, अल्लाह तआला से कमाल मुहब्बत की निशानी यह है कि हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत हो और हुज़ूर ﷺ से इश्क़ की अलामत यह है कि आप ﷺ के एहले बैत से मुहब्बत हो। अगर आप पढ़ते पढ़ाते आपकी गली से सैयद ज़ादे खेलते कूदते निकलते आप (सूफी अमानुल्लाह पानीपती) हाथ से किताब रख कर सीधे खड़े हो जाते और जब तक सैयद ज़ादे मौजूद रहते आप बैठते न थे।'' (अख़बारुल अख़यार फी इसरारुल अबरार)

मुहिब्बाने एहले बैत का मुक़ाम

शैख़ ज़ैनुद्दीन अब्दुल रहमान खिलाल बग़दादी फरमाते हैं:

मुझे [illegible] के एक अमीर ने बताया कि जब [illegible] मर्ज़े मौत (सुक्रात) में मुब्तिला हुआ तो एक दिन उस पर सख़्त इज़्तिराब तारी हुआ, मुंह सियाह हो गया और रंग बदल गया, जब इफाक़ा हुआ तो लोगों से उसने सूरत बयान की, तो उसने कहाः मेरे पास अज़ाब के फरिश्ते आए इतने में रसूले अकरम ﷺ तशरीफ़ लाए और फरमायाः ''उसे छोड़ दो क्योंकि यह मेरी औलाद से मुहब्बत रखता था और उनकी ख़िदमत करता था।'' चुनान्चे वह (फरिश्ते) चले गए।'' अगर आक़िबत को आराम दह बनाना है तो सादाते किराम से मुहब्बत रखें, उनकी इज़्ज़त एहतराम बजा लाऐं, एहतराम से इस तरह पेश आऐं जिस तरह सरदार से पेश आया जाता है। इर्द गिर्द माहोल का जाइज़ा लें, पड़ौस में एक नज़र डालें, सादाते किराम को ढूंढें और उनकी ज़रूरयात को पूरा करें और सरापा ख़ादिम बन जाऐं यही तुम्हारी आख़िरत के लिए बेहतर है। (ज़ैनुल बरकात)

इमाम मालिक के हाँ क़राबत रसूल ﷺ का लिहाज़:

(1) हज़रते इमाम मालिक ﵁ को जब जाफर बिन सुलेमान ने कोड़े मारे जिसकी वजह से आप बेहोश हो गए थे और आपको बेहोशी की हालत में वहाँ से उठा कर लाया गया था जब आपको होश आया और लोग मिज़ाज पुर्सी के लिए आपकी ख़िदमत में आए तो आपने फरमाया कि मैंने अपने मारने वाले (यानी जाफर बिन सुलेमान) को माफ कर दिया, किसी ने पूछा हुज़ूर क्यों आप माफ फरमा रहे हैं? इस पर फरमाया कि मैं ख़ौफ करता हूँ कि अगर मुझे

मौत आ गई और उस वक्त नबी करीम ﷺ से मुलाक़ात हुई तो मुझे शर्मिंदगी होगी कि मेरी मार के सबब से हुज़ूर ﷺ के किसी क़राबती को जहन्नम में डाला जाए। (शिफ़ा शरीफ़ जुज़ सानी स. 33 इलमिया बैरूत)

अल्लाहु अक्बर यह है अज़मते क़राबते रसूल ﷺ की इमाम मालिक के हाँ।

(2) रिवायत में यह भी है कि मंसूर ने इमाम का बदला जाफर से लेने का इरादा किया तो इमाम ने फरमाया "खुदा की पनाह मांगता हूँ अल्लाह की क़सम उसके कोड़ों में से जो कोड़ा भी मेरे जिस्म से हटता था में उसी वक्त माफ कर देता था इसलिए कि उसकी रसूलुल्लाह ﷺ से रिश्तेदारी है। (शिफा शरीफ जुज़ सानी स. 33 इलमिया बैरूत)

सादात का नसब का ताना न दो

हदीस सहीह में है जैसा कि बहुत से एहले सुनन ने बयान किया है:

जब (हुज़ूर पाक ﷺ के चचा) अबु लहब (जिसके कुफ्र में पूरी सूरः नाज़िल हुई) की बेटी हिजरत करके मदीना तैयबा तशरीफ लाईं तो उन से कहा गया कि तुम्हारी हिजरत तुम्हें बेनियाज़ नहीं करेगी, तुम तो जहन्नम के ईंधन की बेटी हो। उन्होंने यह बात नबी अकरम ﷺ से अर्ज़ की तो आप सख़्त नाराज़ हुए और बरसरे मिंबर फरमायाः

इन लोगों का क्या हाल है जो मुझे मेरे नसब और रिश्तेदारों के बारे में अज़ियत देते हैं! ख़बरदार! जिसने मेरे नसब और रिश्तेदारों को अज़ियत दी हैं उसने मुझे अज़ियत दी और जिसने मुझे अज़ियत

दी उसने अल्लाह को अज़ियत दी।" (बरकात आले रसूलुल्लाह ﷺ स. 257)

दुश्मन एहले बैत को इबादत काम नहीं आएगी

इमाम तिबरानी व हाकिम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत हैं कि रसूले पाक ﷺ ने फरमाया (हदीस का आख़री हिस्सा मुलाहिज़ा फरमाऐं):

अगर कोई शख़्स बैतुल्लाह के एक कोने और मुक़ाम इब्राहीम के दर्मियान क़याम करे नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे फिर वह एहले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वह जहन्नम में जाएगा। (बरकात आल रसूल ﷺ स. 257, ख़साईसुल कुबरा जि. 2, स. 565 इमाम सीयूती)

सादात का बेअदब कौन?

इब्ने अदी और इमाम बैहक़ी "शुअ़ेबुल ईमान" में हज़रत सैयदना अली मुरतज़ा رضی اللہ عنہ से रिवायत हैं कि रसूले करीम ﷺ ने फ़रमायाः

जो शख़्स मेरी इतरते तय्यबा और अंसार किराम को नहीं पहचानता (यानी ताज़ीम नहीं करता) तो उसकी तीन में से कोई एक वजह होगी या वह मुनाफिक़ है या वल्दुल ज़िना है या जब उसकी माँ हामला हुई होगी तो वह पाक नहीं होगी।" (बरकात आले रसूल ﷺ स. 258)

सहीहुल नसब सैयद जहन्नम में नहीं जाएगा

(1) इमाम कुरतबी (668 हि.) ने सैयदुल मुफस्सरीन हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से आयत करीमा وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ (प.30).

(तर्जुमा: और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे)

की तफ़्सीर में नक़्ल किया है कि वह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अनवर सैयद आलम ﷺ इस बात पर राज़ी हुए कि उनके एहले बैत में से कोई जहन्नम में न जाए। (सवानेह करबला स. 51)

नबी करीम नूर मुजस्सम ने फ़रमाया:

(2) बेशक (सैयदा) फातिमा ﷺ ने अपनी पाकदामनी की हिफाज़त इस तरह से की तो अल्लाह तआला ने उन्हें और उनकी औलाद को आग पर हराम फरमाया। (बरकाते आले रसूल स. 59)

(3) हाकिम ने फरमाया यह हदीस सहीह है हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ फरमाते हैं कि नबी अकरम सैयद आलम ﷺ ने फ़रमाया:

"मैं ने अपने रब करीम से दुआ की कि मेरे एहले बैत में किसी को आग में दाखिल न फरमाए तो उसने मेरी दुआ कुबूल फरमा ली।" (बरकाते आले रसूल स. 59)

आब ततहीर से जिसमें पौदे जमे
इस रियाज़ निजाबत पे लाखों सलाम

(4) इमाम हाकिम ﷺ ने हज़रत अनस ﷺ से रिवायत की उन्होंने कहा कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

मेरे रब ने मेरे एहले बैत के बारे में मुझ से वादा किया है जो इनमें से तौहीद और मेरी तबलीग़ (सुन्नत) के साथ साबित क़दम रहेगा, अल्लाह तआला उनको अज़ाब न देगा। (अल् नेमतुल उज़्मा तर्जुमा: अल्ख़साईसुल कुबरा लिलसीवती जि. 2, स. 566)

(5) हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷺ से मरवी है कि मैंने बारगाहे रिसालत ﷺ में अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! कुरैश जब आपस में मिलते हैं तो हसीन मुस्कुराते चेहरों से मिलते हैं और जब

हम से मिलते हैं तो ऐसे चेहरों से मिलते हैं जिन्हें हम नहीं जानते (यानी जज़्बात से आरी चेहरों के साथ) हज़रत अब्बास फरमाते हैं: हुज़ूर नबी अकरम ﷺ यह सुन कर शदीद जलाल में आ गए और फरमाया: उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है किसी भी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ और मेरी क़राबत की ख़ातिर तुम से मुहब्बत न करे।" उसे इमाम अहमद, नसाई, हाकिम और बज़ार ने रिवायत किया है।

एक ईमान अफरोज़ वाक़िआ:

डा. सैयद मुहम्मद मज़ाहिर अशरफ अशरफी जीलानी बयान फरमाते हैं कि "आला हज़रत मुजद्दीदे दीन व मिल्लत हज़रते मौलाना इमाम अहमद रज़ा ख़ान कुद्दस सिर्रहू बरैली के जिस मोहल्ले में क़याम पज़ीर थे उसी मोहल्ले में एक सैयद ज़ादे रहते थे, जो शराब नोशी करते थे एक मर्तबा आला हज़रत ने अपने घर पर कोई तक़रीब मुंअक़िद फरमाई और इस तक़रीब में मोहल्ले के तमाम लोगों को मदऊ किया लेकिन इस सैयद ज़ादे को मदऊ नहीं किया, तक़रीब ख़त्म हो गई और तमाम मेहमान अपने घरों को चले गए, उसी रात आला हज़रत ने ख़्वाब देखा कि एक दरिया के किनारे मेरे और आपके बल्कि सब के आक़ा व मौला सुल्तानुल अंबिया ﷺ कुछ ग़लीज़ कपड़े धो रहे हैं तो आला हज़रत जब क़रीब आ गए और चाहा कि वह ग़लीज़ कपड़े हुज़ूर ﷺ से लेकर खुद धो दें तो सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया: अहमद रज़ा! तुम ने मेरी औलाद से किनारा कशी कर ली है और इस तरफ मुंह तक नहीं करते जहाँ वह क़याम पज़ीर है लिहाज़ा मैं उसके गंदे कपड़ों से खुद ग़िलाज़त दूर कर रहा हूँ बस उसी वक़्त आला हज़रत की आंख खुल गई और बात

समझ में आ गई कि यह किस तरफ इशारा है, चुनान्चे बग़ैर किसी हिचकिचाहट के आला हज़रत उसी वक़्त अपने घर से घुटनों और हाथों के बल चल कर उन सैयद ज़ादे के दरवाज़े पर तशरीफ लाए और आला हज़रत ने उनके पाँव पकड़ लिए फिर माफी के तलबगार हुए, सैयद साहब ने आला हज़रत को जब इस हाल में देखा तो मुताज्जिब हुए और कहा, मौलाना! यह क्या हाल है? आपका, और क्यों मुझ गुनहगार को शर्मिंदा करते हैं, तो आला हज़रत ने अपने ख़्वाब का तफ्सील से ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया: ''मियाँ साहबज़ादे! हमारे ईमान और ऐतक़ाद की बुनियाद ही यह है कि नबी करीम ﷺ से फ़िदाया न वालिहाना मुहब्बत की जाए, और अगर कोई बदबख़्त मुहब्बते रसूल ﷺ से आरी है रियाकारी तो वह मुसलमान नहीं रह सकता क्योंकि अल्लाह अपने हबीब ﷺ से मुहब्बत करने का हुक्म देता है और जो अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ वर्ज़ी करे वह दायरा इस्लाम से ख़रिज है, और जब मैंने मर्कज़ ईमान व ऐतक़ाद को इसी तरह और फरमाते सुना तो मुझे अपनी माफी मांगने और रसूलुल्लाह ﷺ की सरकार में सुर्ख़रू होने की यही एक सूरत नज़र आई कि आपकी ख़िदमत में अपनी समझ की ग़ल्ती की माफी मांगू इस तरह हाज़िर हूँ कि आपको माफ करने में कोई उज़्र न हो, जब सैयद साहब ने आला हज़रत से उनके ख़्वाब का हाल सुना और आला हज़रत की गुफ्तुगू सुनी तो फौरन घर के अन्दर गए और शराब की तमाम बोतलें लाकर आला हज़रत के सामने गली में फैंक दीं और कहा कि जब हमारे नाना जान ने हमारी ग़िलाज़त साफ फरमा दी है तो अब कोई वजह नहीं कि यह उम्मुल ख़बाईस (शराब) इस घर में रहे और उसी वक़्त शराब नोशी से तौबा कर ली, आला हज़रत ﷺ जो अभी तक उनके दरवाज़े पर घुटनों के

बल खड़े थे उनको उठाया और एक तवील मुआनक़ा किया, (यानी लंबा गले मिले) घर के अंदर ले गए और हस्बे हालत ख़ातिर मदारत की। (सिरातुल तालिबीन फी तुर्कुल हक़ वालदैन इमाम अहमद रज़ा और एहतराम सादात स. 44,45 मतबुआ अंजुमन ज़िया तैयबा) (ज़ैनुल बरकात)

सैयद से मिसाली मुहब्बत

आशिक़े रसूल ﷺ मौलाना गुलाम रसूले आलम पुरी ज़िला होशियार पुर (इण्डिया) के दुरवेश और साहिबे तसानीफ बुज़ुर्ग थे। 1892 को इंतिक़ाल किया और वहीं आलमपुर में मदफून हैं। उनके मुतअल्लिक़ एक वाक़्या है कि: मौलाना नाले के एक किनारे पर खड़े थे दूसरे किनारे पर एक लड़का खड़ा था। आपने आवाज़ देकर उसे पूछा। लड़के पानी कितना गहरा है? वह न बोले। शायद उसने सुना नहीं था।

आपने फिर आवाज़ दी। लड़के तू कौन है, बोलते क्यों नहीं।'' उसने कहा: ''मैं सैयद हूँ।'' आप ज़ार ज़ार रोने लगे कि सख़्त बेअदबी हो गई। अब इस सैयद ज़ादे से इसरार करने लगे कि तुम मुझे कहो ''ओ गूजर कितना पानी है।'' लेकिन वह न कहते थे। आप ज़ार ज़ार रो रहे थे और कह रहे थे कि तुम मुझे ओ गूजर कहो। आख़िर लोग जमा हो गए और सैयद ज़ादे को मजबूर किया सैयद ज़ादे ने कहा ''ओ गूजर कितना पानी है।'' मौलाना ने जवाब दिया: हुज़ूर पार कर के बताता हूँ।'' चुनान्चे आप पानी से गुज़र कर दूसरी जानिब गए और साहबज़ादे को कंधों पर उठा कर नाले की उस जानिब ले आए। वह साहबज़ादा यतीम था। आपने उसे पढ़ाया, अपने पास रखा और बाद में मोज़ा मालवे में उसे पटवारी की नौकरी दिलवा दी। उसकी शादी भी करा दी। (औलियाए जालंधर स. 101)

सादात को बरोज़ क़यामत हुज़ूर की निस्बत काम आएगी

इस बारे में नबी अकरम ﷺ की बहुत सारी सहीह अहादीस हैं कि एहले बैत किराम/ सादात किराम की आप ﷺ के साथ निस्बत (नस्बी व हस्बी) उनके लिए दुनिया और आख़िरत में नफा बख़्शने वाली और मुफीद व मोस्सिर है। उनमें से एक वह रिवायत है जिसे इमाम अहमद और हाकिम ने बयान किया है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

(1) फातिमा मेरे जिगर का टुक्ड़ा है, जो चीज़ उसे नागवार करती है वह मुझे भी नागवार करती है और जो चीज़ उसे मुसर्रत व फरहत बख़्शती है वह मुझे भी खुशगवार करती है, क़यामत के दिन सारे रिश्ते ख़त्म हो जाऐंगे, सिवाए मेरी क़राबत (रिश्तेदारी) और मेरे ख़ान्दान वास्ते और मेरे दोनों ऐतराफ के सुस्राली रिश्तों के (सबबी निस्बत से मुराद उन गुलामों का तअल्लुक़ है जो आपके आज़ाद कर्दा थे)।

(2) हुज़ूरे अकरम ﷺ के साथ ख़ान्दानी निस्बत दुनिया व आख़िरत में नफा बख़्श है, उनमें से एक आपका यह क़ौल है, जिसे इब्ने असाकर ने हज़रत उमर फारूक़ आज़म से रिवायत किया है। फ़रमाया: क़यामत के दिन तमाम आबाई निस्बतें और सुसराली रिश्ते ख़त्म हो जाऐंगे, सिवाए मेरे ख़ान्दानी और सुसराली रिश्ते के।

(3) तिबरानी और दूसरे मुहद्दिसीन ने एक लंबी रिवायत बयान की है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

उस क़ौम का अंजाम क्या होगा जो यह समझती है कि मेरी क़राबत कोई नफा नहीं पहुंचा सकती, बेशक क़यामत के दिन तमाम सबबी रिश्ते (आज़ाद कर्दा गुलामों के रिश्ते) और नस्बी (ख़ान्दानी)

रिश्ते ख़त्म हो जाऐंगे सिवाए मेरे नसबी और सबबी रिश्तों के और इसमें कोई शक नहीं है कि मेरे साथ ख़ान्दानी तअल्लुक़ की निस्बत दुनिया और आख़िरत में लाज़वाल और ग़ैर मुनक़ता है उसे कोई भी ख़त्म नहीं कर सकता।''

(4) इमाम अहमद, हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से रिवायत किया है कि उन्होंने फ़रमाया:

मैंने रसूल ﷺ को मिंबर पर फरमाते हुए सुना कि इस क़ौम का अंजाम क्या होगा जो कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से क़राबत उनकी क़ौम को क़यामत में कोई फायदा नहीं पहुंचाएगी, हाँ अल्लाह की क़सम! मेरी क़राबत दुनिया और आख़िरत में ज़िंदा और मौजूद रहेगी। जो कभी नहीं कट सकती और ऐ लोगो! मैं हौज़ कौसर पर तुम्हारे लिए तोशा आख़िरत बन कर इंतिज़ार करूंगा।

(5) हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

मेरे नसब के अलावा तमाम ख़ान्दानी रिश्ते क़यामत के दिन ख़त्म हो जाऐंगे।

(मुस्नद अहमदुल मुस्तदरक लिलहाकिम जि. 3, स. 158, इतहाफुल साईल स. 63 इमाम अब्दुल रऊफु मनादी)

अनपढ़ सैयद अफज़ल है या ग़ैर सैयद आलिम

ख़ातिमुल मुहक्क़िीन इमाम शैख़ इब्ने हज्र अस्क़लानी رحمه الله (852 हि०) के फतावा में है, उनसे पूछा गया कि अनपढ़ सैयद अफज़ल है या ग़ैर सैयद आलिम? और अगर यह दोनों किसी जगह इकट्ठे मौजूद हों तो उनमें से ज़्यादा इज़्ज़त और एहतराम का मुस्तहिक़ पहले किसको समझा जाए? मसलन अगर ऐसी मेहफिल में चाय, काफी या कोई और चीज़ पेश करनी हो तो पहले किस से की जाए? या ऐसी मेहफिल में कोई शख़्स अगर हाथ चूमना चाहता है या पेशानी को

बोसा देना चाहता है तो आग़ाज़ किससे किया जाए?

इमाम इब्ने हजर असक़लानी जवाब में फरमाते हैं: इन दोनों को अल्लाह तआ़ला ने बहुत बड़ी फ़ज़ीलत बख़्शी है मगर सैयद में क्योंकि लायक़ तकरीम गोशा-ए-रसूलुल्लाह ﷺ के खून की निस्बत है जिसकी बराबरी दुनिया की कोई चीज़ नहीं कर सकती इसी लिहाज़ से बाज़ उलमा किराम ने कहा है:

''हम जिगर गोश-ए-रसूलुल्लाह ﷺ को दुनिया की किसी चीज़ से भी बराबरी की निस्बत नहीं दे सकते।''

बाक़ी रहा बाअमल आलिमे दीन का क़िस्सा तो चूंकि उसकी ज़ात मुसलमानों के लिए नफा बख़्श, गुमराहों के लिए राहे हिदायत है और यह कि उलमा-ए-इस्लाम रसूले अकरम ﷺ के नाइब व जानशीन और उनके उलूम व मआरिफ के वारिस और इल्मबर्दार हैं इसलिए अल्लाह तआ़ला की तरफ से तौफीक़ याफ्ता लोगों से हमें यह तवक़्क़ो है कि वह सादात किराम और उलमाए किराम की इज़्ज़त एहतराम और ताज़ीम करने में उनकी हक़ तलफ़ी नहीं करेंगे।

ऐसी महफ़िलों में मज़कूरा बाला लायक़े एहतराम हस्तियों के यक्जा होने पर किसी चीज़ के देने या ताज़ीम के आदाब बजा लाने के सिलसिले में आग़ाज़ करने के लिए हमें नबी अकरम ﷺ के इस क़ौल मुबारक को पेशे नज़र रखना चाहिए कि (इज़्ज़त व एहतराम और मेहमान नवाज़ी वग़ैरा में एहले कुरैश को मुक़द्दम रखिए) और फिर मज़कूर बाला सूरत में तो एक शख़्स को जिगर गोशा -ए-रसूलुल्लाह ﷺ की निस्बत भी हासिल है।'' (ज़ैनुल बरकात)

क्या बात रज़ा इस चमनिस्तान करम की
ज़ेहरा है कली जिसकी, हुसैन और हसन फूल

सादात की ख़िदमत का सिला कोन देगा?

इमाम देलमी रावी हैं कि हुज़ूर पुर नूर शाफे यौमुन नुशूर ﷺ ने फ़रमाया: ''जो शख़्स वसीला चाहता है और उसकी ख़्वाहिश है कि मेरे दरबार में उसकी कोई ख़िदमत हो जिसकी बदौलत में क़यामत के दिन उसकी शफाअत करूं, तो उसे मेरे एहले बैत की ख़िदमत करनी चाहिए और उन्हें खुश करना चाहिए।'' (बरकाते आले रसूल ﷺ स. 245)

एहसान का बदला कौन देगा?

इमाम तिबरानी मरफ़ूअन रिवायत करते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: ''जिस शख़्स ने हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की औलाद पर कोई ऐहसान किया और उसने इसका बदला नहीं दिया, कल क़यामत के दिन जब वह मुझ से मिलेगा तो मैं उसे बदला दूँगा।'' (बरकाते आले रसूल ﷺ स. 245)

सय्यद और वज़ीर

"حجة الله على العالمين" में है احرر مفهومه, वज़ीर, अली बिन ईसा हर साल किसी अलवी सैयद ज़ादे को 5000 हज़ार दिरहम बतौरे हदया देते थे, एक साल हुआ कि उन्होंने उस सैयद ज़ादे को नशे में धुत ज़मीन पर पड़े देखा, नशे में देख कर इरादा किया कि आईंदा उसको कुछ नहीं दूंगा, क्योंकि यह तो इन पैसों को शराब व कबाब में ख़र्च करता है।

चुनान्चे अगले साल जब वह सैयद ज़ादा वज़ीर अली बिन ईसा के पास अपना हदिया लेने आया तो वज़ीर ने इस सैयद ज़ादे को सख़्ती से मना किया कि आईंदा मेरे पास मत आना क्योंकि तुम इन पैसों को हराम कामों में ख़र्च करते हो, यह सुन कर वह सैयद ज़ादा

तशरीफ़ ले गया।

रात को वज़ीर अली बिन ईसा ने ख़्वाब देखा और ख़्वाब में उनको नबियों के ताजदार صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की ज़ियारत नसीब हुई, मगर हाए अफसोस जब वज़ीर ने सरकार ﷺ की बारगाह में सलाम अर्ज़ किया तो आक़ाए दो आलम ﷺ ने वज़ीर से अपना रुख़े अनवर फैर लिया, वज़ीर सख़्त बेचैन व परेशान हुआ, कि सरकार ﷺ मुझ से अपना रुख़ अनवर फैर रहे हैं।

चुनान्चे दूसरी जानिब से फिर सरकार ﷺ की बारगाह में आकर अर्ज़ गुज़ार हुआ। या रसूलुल्लाह ﷺ आप मुझ से अपना रुख़े ज़ेबा क्यों फैर रहे हैं, मुझसे क्या ख़ता हुई है?

नबियों के ताजदार ﷺ ने इर्शाद फरमाया कि:

''तुम इस सैयद ज़ादे को इसके किसी ज़ाती कमाल की वजह से नज़राना देते थे या मेरी नसब की वजह से?''

अल्लाहु अकबर! सतलब क्या, मतलब साफ ज़ाहिर है कि अगर तुम इसको सैयद समझ कर ख़िदमत करते थे तो अब भी वह सैयद ही है, गुनाहों की वजह से इसका नसब मुझसे मुंक़ता नहीं हुआ, वह मेरे आल ही में दाख़िल है, जब वह मेरी औलाद है तो तुम ने उसका नज़राना क्यों बंद किया?

आशिक़े आले रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضی اللہ عنہ खूब फरमाते हैं।

''सैयद अगर बद मज़हब भी हो जाए तब भी उसकी ताज़ीम नहीं जाती जब तक उसकी बद मज़हबी हद कुफ़्र तक न पहुंचे।'' (फतावा रज़ाविया, बरकाते आले रसूल)

सरकारे दो आलम की शफाअत

आला हज़रत इमाम एहले सुन्नत शाह इमाम अहमद रज़ा

क़ादरी फरमाते हैं कि सच्चे मुहिब्बाने एहले बैत किराम के लिए रोज़े क़यामत नेमतें, बरकतें, राहतें हैं, तिबरानी की हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया:

हमारी एहले बैत की मुहब्बत लाज़िम पकड़ो कि जो अल्लाह से हमारी दोस्ती के साथ मिलेगा। वह हमारी शफ़ाअत से जन्नत में जाएगा, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि किसी बंदे को उसका अमल नफा न देगा, जब तक हमारा हक़ न पहचाने। (फतावा रिज़्विया 422/22 रज़ा फाउंडेशन)

अगर सैयद के आमाल व अख़लाक़ ख़राब हों तो क्या हुक्म है?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी फरमाते हैं कि ''सैयद सुन्नी मज़हब की ताज़ीम लाज़िम है, अगर्चे उसके आमाल कैसे ही हो इन आमाल के सबब इससे दूर न रहा जाएगा, नफ्स आमाल से दूर न हो बल्कि इस (सैयद) के मज़हब में भी क़लील फर्क़ हो कि हद कुफ्र तक न पहुंचे जैसे तफ़्सील तो इस हालत में भी इसकी ताज़ीम सयादत न जाएगी, हाँ अगर इसकी बद मज़हबी हद कुफ्र तक पहुंचे जैसे राफज़ी वहाबी क़ादयानी नैचरी वग़ैरहुम, तो अब इसकी ताज़ीम हराम है कि जो वजह ताज़ीम थी यानी सयादत वही न रही। (फतावा रिज़्विया 423/22, जदीद)

सैयदना अब्दुल्लाह बिन मुबारक और सैयद ज़ादा:

सुल्तान वाईज़ीन अल्लामा अबुल नूर मुहम्मद बशीर साहब तज़्किरतुल औलिया के हवाले से फरमाते हैं कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक رضی اللہ عنہ एक बड़े मजमा के साथ मस्जिद से निकले तो एक सैयद ज़ादा ने इनसे कहा ''ऐ अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ यह कैसा मजमा

है? देख मैं फरज़ंद रसूल हूँ, तेरा बाप तो ऐसा न था, हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷺ ने जवाब दिया, मैं वह काम करता हूँ जो तुम्हारे नाना जान ने किया था और तुम नहीं करते और यह भी कहा कि बेशक तुम सैयद हो और तुम्हारे वालिद रसूलुल्लाह ﷺ हैं और मेरा वालिद ऐसा न था मगर तुम्हारे वालिद से इल्म की मीरास बाक़ी रही, मैंने तुम्हारे वालिद की मीरास ली, मैं अज़ीज़ और बुज़ुर्ग हो गया, तुमने मेरे वालिद की मीरास ली तुम इज़्ज़त न पा सके, उसी रात ख़्वाब में हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷺ ने हुज़ूर ﷺ को देखा कि चेहरा मुबारका आपका मुतग़य्यर है, अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ यह रंजिश क्यों है? फरमाया तुम ने मेरे एक बेटे पर नुक्ता चीनी की है, अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷺ जागे और इस सैयद ज़ादा की तलाश में निकले ताकि इससे माफी तलब करें, उधर इस सैयद ज़ादा ने भी इसी रात को ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम ﷺ को देखा और हुज़ूर ﷺ ने इससे यह फरमाया कि बेटा अगर तू अच्छा होता तो वह तुम्हें क्यों ऐसा कलमा कहता, वह सैयद ज़ादा भी जागा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷺ की तलाश में निकला, चुनान्चे दोनों की मुलाक़ात हो गई, और दोनों ने अपने अपने ख़्वाब सुना कर एक दूसरे से मअज़रत तलब कर ली।" (सच्ची हिकायात हिस्सा अव्वल स. 93.94, अज़ सुल्तानुल वाईज़ीन मौलाना मो. बशीर)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी के एक ख़त का इक़्तिबास:

15 ज़ुल-क़अ़दा 1329 हि. को मौलाना सैयद अहमद साहब मोहतमिम मदरसा इस्लामिया अवदय पुर मेवाड़ राजपुताना ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी ﷺ की ख़िदमत में एक ख़त लिखा

जिसमें यह शिकायत की कि मौलवी अब्दुल रहीम साहब अहमदाबादी और मौलवी अलाउद्दीन साहब सिंधी सादाते उज़्ज़ाम व फुक़रा ज़िल् एहतराम के पीछे बिला वजह पड़ रहे हैं, आख़िर में आला हज़रत से यह पूछा गया कि (1) सादात का दिल दुखाना (2) और उनसे सनद तलब करना (3) और न मिलने पर बुरा कहना कहाँ तक जाइज़ है। (4) और ऐसा कहने वाले की निस्बत शरअ़ शरीफ़ में क्या हुक्म है?

आला हज़रत इमाम एहले सुन्नत शाह इमाम अहमद रज़ा क़ादरी ﷺ ने ख़त का जवाब तहरीर फरमाया जिसके आख़िर में अपनी सादात किराम से अक़ीदत व मुहब्बत का इज़हार फरमाया मुलाहिज़ा हो आप फरमाते हैं। (1) यह फ़क़ीर ज़लील बिहमदिही तआ़ला हज़रात सादात किराम का अदना गुलाम व ख़ाके पा है (2) उनकी मुहब्बत व अज़मत ज़रिया-ए-निजात व शफाअत जानता है। (3) अपनी किताबों में तेहरीर कर चुका है कि सैयद अगर बदमज़हब भी हो जाए तो उसकी ताज़ीम नहीं जाती जब तक बदमज़हबी हद्दे कुफ़्र तक न पहुंचे। (4) हाँ बाद कुफ़्र सयादत ही नहीं रहती, फिर उसकी ताज़ीम हराम हो जाती है। (5) और यह भी फ़क़ीर बारहा फतवा दे चुका है कि किसी को सैयद समझने और उसकी ताज़ीम करने के लिए हमें अपने ज़ाती इल्म से उसे सैयद जानना ज़रूरी नहीं जो लोग सैयद कहलाए जाते हैं हम उनकी ताज़ीम करेंगे, हमें तहक़ीक़ात की हाजत नहीं, न सयादत की सनद मांगने का हम को हुक्म दिया गया है। (6) और ख़्वाही नख़्वाही सनद दिखाने पर मजबूर करना और न दिखाऐं तो बुरा कहना मतऊन करना हरगिज़ जाइज़ नहीं, अल-हदीस (लोग अपने नसब पर अमीन हैं)

(8) मेरे ख़्याल में एक हिकायत है जिस पर मेरा अमल है

कि एक शख़्स किसी सैयद से उलझा, उन्होंने फरमाया मैं सैयद हूँ, कहा क्या सनद है? तुम्हारे सैयद होने की, रात को ज़ियारत अक़्दस से मुशर्रफ हुआ, कि माअरका-ए-हश्र है यह शफाअत ख़्वाह हुआ, (हुज़ूर ﷺ ने) ऐराज़ फरमाया। (यानी रुख़ जैबा दूसरी जानिब फरमा लिया, उसकी तरफ इल्तिफात न फरमाया) उसने अर्ज़ की मैं भी हुज़ूर ﷺ का उम्मती हूँ, फरमाया क्या सनद है तेरे उम्मती होने की? (फतावा रिज़विया शरीफ 588-587/29)(अहकामुस्सादात)

बलख़ की शहज़ादी का रक़्त अंगेज़ वाक़िआ:

शैख़ अद्दी ने अपनी किताब मशारिक़ुल अनवार में इब्ने जोज़ी की तसनीफ़ "मुलतक़ित" से नक़्ल किया कि बलख़ में एक अल्वी क़याम पज़ीर था। उसकी एक ज़ोजा और चंद बेटियाँ थीं, क़ज़ा इलाही से वह शख़्स (अलवी) फौत हो गया, उनकी बीवी कहती हैं कि मैं शमातत आदा के ख़ौफ़ से समरक़ंदी चली गई, मैं वहाँ सख़्त सर्दी में पहुंची, मैंने अपनी बेटियों को मस्जिद में दाख़िल किया और खुद खुराक की तलाश में चल दी, मैंने देखा कि लोग एक शख़्स के गिर्द जमा हैं, मैंने उसके बारे में मालूम किया तो लोगों ने कहा यह रईसे शहर है, मैं उसके पास पहुंची और अपना हाल ज़ार बयान किया उसने कहा अपने अलवी होने पर गवाह पेश करो, उसने मेरी तरफ कोई तवज्जह नहीं दी, मैं वापस मस्जिद की तरफ चल दी, मैंने रास्ते में एक बूढ़ा बुलंद जगह बैठा हुआ देखा जिसके गिर्द कुछ लोग जमा थे मैंने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा यह मुहाफिज़े शहर है और मजूसी है, मैंने सोचा मुमकिन है उससे कुछ फायदा हासिल हो जाए चुनान्चे मैं उसके पास पहुंची, अपनी सरगुज़िश्त बयान की और रईसे शहर के साथ जो वाक़िआ पेश आया था बयान किया और उसे यह भी बताया कि मेरी बच्चियाँ मस्जिद में हैं, और उनके खाने पीने

के लिए कोई चीज़ नहीं है।

इस (मजूसी मुहाफिज़े शहर) ने अपने ख़ादिम को बुलाया और कहा अपनी आक़ा (यानी मेरी बीवी) को कह कि वह कपड़े पहन कर और तैयार होकर आए, चुनान्चे वह आई और उसके साथ चंद कनीज़ें भी थीं, बूढ़े ने उसे कहा उस औरत के साथ फलाँ मस्जिद में जा और उसकी बेटियों को अपने घर ले, वह मेरे साथ गई और बच्चियों को अपने घर ले आई, शैख़ ने अपने घर में हमारे लिए अलग रिहाईशगाह का इंतिज़ाम किया, हमें बेहतरीन कपड़े पहनाए, हमारे गुस्ल का इंतिज़ाम किया और हमें तरह तरह के खाने खिलाए, आधी रात के वक़्त रईस शहर ने ख़्वाब में देखा कि क़यामत क़ायम हो गई है और लवाउल हम्द नबी करीम ﷺ के सर अनवर पर लहरा रहा है, आप ﷺ ने इस रईस से ऐराज़ फरमाया (यानी रईस से रुख़े अनवर फैर लिया और उसकी तरफ इल्तिफात न फरमाया, उसने अर्ज़ किया हुज़ूर आप ﷺ मुझसे ऐराज़ फरमा रहे हैं हालांकि मैं मुसलमान हूँ, नबी करीम ﷺ ने फरमाया अपने मुसलमान होने पर गवाह पेश करो, वह शख़्स हैरत ज़दा रह गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "तूने इस अल्वी औरत को जो कुछ कहा था भूल गया? यह महल इस शैख़ का है जिसके घर में इस वक़्त वह।" (अलवी) औरत (बलख़ की शहज़ादी है)

रईस बैदार हुआ तो रो रहा था (अपनी हरमाँ नसीबी पर) और अपने मुंह पर तमांचे मार रहा था। उसने अपने गुलामों को इस औरत की तलाश में भेजा और खुद भी तलाश में निकला, उसे बताया गया कि वह (अलवी) औरत मजूसी के घर में क़याम पज़ीर है, यह रईस इस मजूसी के पास गया और कहा "वह अलवी औरत कहाँ है?" उसने कहा: "मेरे घर में है।" रईस ने कहा: उसे मेरे हाँ भेज दो।" शैख़ ने कहा: "यह नहीं हो सकता।" रईस ने कहा: "मुझ से

यह हज़ार दीनार ले लो और उसे मेरे यहाँ भेज दो।" उस शैख़ ने कहा: "बख़ुदा ऐसा नहीं हो सकता अगर्चे तुम लाख दीनार भी दो।" जब रईस ने ज़्यादा इसरार किया तो शैख़ ने उसे कहा: "जो ख़्वाब तुम ने देखा है मैंने भी देखा है और जो महल तुम ने देखा है वह वाक़ई मेरा है, तुम इसलिए मुझ पर फ़ख़्र कर रहे हो कि तुम मुसलमान हो, बख़ुदा वह अलवी (बरकतों वाली) ख़ातून जैसे ही हमारे घर में तशरीफ़ लाईं तो हम सब उनके हाथ पर मुसलमान हो चुके हैं, और उनकी बरकतें हमें हासिल हो चुकी हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़्वाब में ज़ियारत की तो आपने मुझे फ़रमाया, चूंकि तुमने इस अलवी ख़ातून (मेरी बेटी) की ताज़ीम व तकरीम की है इसलिए यह महल तुम्हारे लिए और तुम्हारे घर वालों के लिए है और तुम जन्नती हो।" (अल् शर्फुल मोबद मुतर्जम स. 366, 267)

दावते फिक्र

ऐहबाब इस वाक़िआ मुबारका को बार-बार पढ़ें, और अपनी इस्लाह करने की कोशिश करें, आज देखने में यह आता है कि ग़रीब और नादार सैयद को लोग किसी खाते में नहीं लाते, बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि मश्हूर अमीर सादात किराम को सर आंखों पर बिठाया जाता है लेकिन अगर कोई ग़रीब और ग़ैर मश्हूर सैयद सामने आ जाए तो उसकी तरफ इल्तिफात करना भी गवारा नहीं किया जाता हालांकि जिस तरह अमीर मश्हूर सैयद ताज़ीम व एहतराम का मुस्तहिक़ है इसी तरह ग़रीब व नादार सैयद ज़ादा भी मुस्तहिक़ हैं, इसलिए कि जिस तरह वह सैयद सरकार दो आलम ﷺ का जुज़ होने का शर्फ रखता है इसी तरह यह भी जुज़ होने की सआदत रखता है तो फिर क्यों एहबाब इस तरह का सुलूक करते हैं कि जिससे ग़रीब सैयद ज़ादे के दिल को तकलीफ होती है।

मुफ़्ती आज़म हिन्द और आले रसूल

जब हज़रत मुफ़्ती आज़म मरज़ुल मौत में मुब्तिला थे, मुतक़दीन व मुरीदीन और ख़्वास आपकी ख़िदमत में मसरूफ थे। आपने अचानक आँखें खोली और फरमाया कि आप लोगों में मुझे सैयद की खुश्बू आ रही है। सैयद साहब ने हाँ से जवाब दिया तो आपने फ़रमाया आप हमारे मख़दूम हैं, आप शाहज़ादे हैं। आपसे ख़िदमत लेना जाइज़ नहीं।

फिर आपने वसियत में फरमाया! मेरा जनाज़ा किसी सैयद से पढ़वाना। जब लाखों अक़ीदत मंद हज़रत मुफ़्ती आज़म हिंद का जनाज़ा पढ़ने के लिए हाज़िर हैं, हज़रत मौलाना अख़तर रज़ा ख़ान साहब नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिए क़दम बढ़ा रहे हैं कि आवाज़ आई किछोछा मुक़द्दसा की अज़ीम शख़सियत साहब सज्जादा हज़रत पीर सैयद मुखतार अशरफ जीलानी दामत बरकातहुमुल आलिया तशरीफ ले आए हैं तो हज़रत सरकार कलाँ की इक़्तिदा में लाखों सुन्नियों, बरेलियों, अशरफियों, चिश्तियों, क़ादरियों, सहरवर्दियों अल्ग़र्ज़ मुसलमानों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की सआदत हासिल की, जिनमें हज़ारहा मशाइख़ उज़्ज़ाम, उलमा-ए-किराम शामिल हुए और खान्दाने सादाते अशरफिया की अज़मत व मंज़िलत पर अपनी अक़ीदत व मुहब्बत की मोहर लगा दी। (इमाम अहमद रज़ा और अहतरामे सादात)

सादात किराम के बच्चों से रवैया

आला हज़रत ﷺ ने एक सैयद साहब को मोहल्ले में आबाद कर लिया था। एक दिन उनका तीन चार साल का बच्चा खेलते-खेलते बच्चों के साथ दरवाज़े के सामने आया और तीन बार आया। आला हज़रत तीनों बार ताज़ीमन खड़े हो गए तो उनके मामू

ज़ाद भाई शाहिद यार ख़ान साहब बहुत वजीहा और ऐसी प्यारी रोअब दाब वाली सूरत वाले थे बच्चे तो क्या बड़े भी उनको देख कर डर जाते थे। वह उठ कर दरवाज़े पर जा खड़े हुए तो सारे बच्चे उनको देख कर भाग गए। तो आला हज़रत ﷺ ने रो रो कर फरमाया कि:-

ऐ भाई क्या आपने सैयद ज़ादे साहब को दरवाज़े से हटा दिया हाए में क़यामत में हुज़ूरे अकरम ﷺ के क़दम मुबारक कैसे चूम सकूँगा? (जहानें रज़ा, इमाम अहमद रज़ा और अहतरामे सादात)

मुफ्ती-ए-आज़म का अदब

अल्लामा सैयद मुहम्मद रियासत अली क़ादरी (बानी इदारा तहक़ीक़ात इमाम अहमद रज़ा) लिखते हैं:

एक दफा का वाक़िआ है कि उर्स रिज़वी के मौक़े पर एक ग़रीब सैयद साहब जो अभी जवान थे और दीवानों जैसी बातें करते थे तशरीफ ले आए और कहा, मुझे पहले खाना दो मुंतज़मीन ने कहा कि अभी नहीं इतनी देर में सैयद साहब आलम दीवांगी में हज़रत मुफ्ती आज़म हिंद की ख़िदमत में जाने लगे उलमा ने उनको रोका मगर किसी न किसी तरह वह मुफ्ती आज़म हिंद की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और फरमाया देखिए हज़रत यह लोग मुझे खाना नहीं देते, मैं भूखा हूँ और सैयद भी हूँ। यह सुनना था कि हुज़ूर मुफ्ती आज़म हिंद खड़े हो गए और इन सैयद साहब का हाथ पकड़ कर अपने पास तख़्त पर बिठाया डिबडिबाई आंखों से फरमाया कि हुज़ूर सैयद साहब पहले आप ही को खाना मिलेगा यह सब आप ही का है वह सैयद साहब बहुत खुश हुए और हज़रत मुफ्ती आज़म हिंद ने जनाब साजिद अली ख़ाँ साहब को बुला कर फौरन हिदायत फरमाई कि सैयद साहब को ले जाइए और उनकी मौजूदगी में फातिहा दिलवाइए और सबसे पहले खाना उनको दीजिए तबर्रुक फरमा लें तो सब को खिलाइए

अब क्या था साहब अकड़े हुए निकले और कहा देखा मुझे पहचानने वाले पहचानते हैं।

हुज़ूर मुफ्ती आज़म हिंद को जब यह मालूम होता कि उनके घर में कोई सैयद आया है तो बहुत खुश होते....मैं (सैयद मुहम्मद रियासत अली क़ादरी) अपने बरेली के क़याम के दौरान जब भी आपका नियाज़ हासिल करने गया तो आपने मुझे कभी अपने पाईंती बैठने नहीं दिया बल्कि अपने पास बिठाते और मेरे बड़े साहबज़ादे सैयद मुहम्मद उवैस अली को अपने पास बुला कर बहुत ही प्यार फरमाते थे। (इमाम अहमद रज़ा और अहतरामे सादात)

आला हज़रत का अदब

(1) आला हज़रत क़िब्ला ﷺ ने एक बार खाना छोड़ा और सिर्फ नाश्ता पर क़नाअत की इसमें भी कोई इज़ाफा मंज़ूर न फरमाया, सारे ख़ान्दान और उनके एहबाब की कोशिश बेकार गई। सैयद मक़बूल साहब की ख़िदमत में नो मोहल्ला खा़स हुए और उनसे अर्ज़ किया कि आज दो महीने होने को आए कि आला हज़रत ने खाना छोड़ दिया है, हम सब कोशिश करके थक गए हैं, आप ही इन्हें मजबूर कर सकते हैं, इस पर उन्होंने फरमाया कि हमारी ज़िंदगी में उन्हें यह हिम्मत हो गई है कि वह खाना छोड़ बैठे हैं। अभी खाना तैयार कराता हूँ और लेकर आता हूँ, हस्बे वादा सैयद मक़बूल साहब एक नेमत खाना लेकर खुद तशरीफ लाए, आला हज़रत क़िब्ला ﷺ ज़नाने मकाने में थे, सैयद साहब की इत्तिला पाते ही बाहर आ गए, सैयद साहब से क़दम बोस हुए, बात चीत शुरू हुई, सैयद साहब ने फरमाया, मैंने सुना है कि आपने खाना छोड़ दिया है, आला हज़रत ने अर्ज़ किया कि मैं तो रोज़ खाता हूँ, सैयद साहब ने फरमाया मुझे मालूम है जैसा आप खाते हैं, आला हज़रत ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर!

मेरे मामूलात में अब तक कोई फर्क नहीं पड़ा है। मैं अपना सब काम बदस्तूर कर रहा हूँ, मुझे इससे ज़्यादा की ज़रूरत नहीं मालूम होती तो सैयद साहब क़िब्ला बरहम हो गए और खड़े होकर फरमाने लगे, अच्छा तो मैं खाना लिये जाता हूँ, कल मैदान क़यामत में सरकार दो जहाँ ﷺ का दामन पकड़ कर अर्ज़ करूंगा कि एक सैयदानी ने बड़े शोक से खाना पकाया और एक सैयद लेकर आया मगर आपके अहमद रज़ा ख़ाँ ﷺ ने किसी तरह न खाया, इस पर आला हज़रत काँप गए और अर्ज़ किया कि मैं तामील हुक्म के लिए हाज़िर हूँ, अभी खाए लेता हूँ, सैयद साहब क़िब्ला ने फ़रमाया अब तो यह खाना जब ही खा सकते हो, जब यह वादा करो कि अब उम्र भर खाना न छोड़ोगे। चुनान्चे आला हज़रत क़िब्ला ﷺ ने उम्र भर खाना न छोड़ने का वादा किया तो सैयद क़िब्ला ने अपने सामने उन्हें खिलाया और खुशी खुशी तशरीफ ले गए। (सिरते आला हज़रत)

इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस को सादात किराम की अदना सी परेशानी भी बैचेन कर देती थी उस वक़्त तक आराम न करते जब तक सैयद ज़ादे को मुतमईन न कर देते थे।

(2) मलिकुल उलमा अल्लामा मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन बिहारी ﷺ लिखते हैं:-

''जिस ज़माने में आला हज़रत के दौलत कदा की मुग़बिरी सिम्त जिसमें कुतुब ख़ाना नया तामीर हो रहा था, औरतें आला हज़रत के क़दीमी आबाई मकान में जिस में हज़रत मौलाना हसन रज़ा ख़ान साहब बिरादर ओसत आला हज़रत मअ़ मुतअल्लिक़ीन तशरीफ रखते थे, क़याम फरमा थीं और आला हज़रत का मकान मर्दाना कर दिया गया था कि हर वक़्त राज मज़दूरों का इज्तिमा रहता, इसी तरह कई महीनों तक वह मकान मर्दाना रहा जिन साहब को आला हज़रत की

ख़िदमत में बारयाबी की ज़रूरत पड़ती बे खटके पहुंच जाया करते जब वह कुतुब ख़ाना मुकम्मल हो गया, मस्तूरात हस्ब दस्तूर साबिक़ इस मकान में चली आईं, इत्तिफाक़ वक़्त कि एक सैयद साहब जो कुछ दिन पहले तशरीफ लाए थे और इस मकान को मर्दाना पाया थे फिर तशरीफ लाए और इस ख़्याल से कि मकान मर्दाना है बेतकल्लुफ अन्दर चले गए, जब निस्फ आंगन में पहुंचे तो मस्तूरात की नज़र पड़ी जो ज़नाना मकान में ख़ानादारी के कामों में मशग़ूल थीं, उन्होंने जब सैयद साहब को देखा तो घबरा कर इधर-उधर पर्दा में हो गईं उनके जाने की आहट से जनाब सैयद साहब को इल्म हुआ कि यह मकान ज़नाना हो गया है, मुझसे सख़्त ग़लती हुई जो मैं चला आया और निदामत के मारे सर झुकाए वापिस होने लगे कि आला हज़रत दक्कन तरफ के साईबान से फौरन तशरीफ लाए और जनाब सैयद साहब को लेकर इस जगह पहुंचे जहाँ हज़रत तशरीफ रखा करते और तसनीफ व तालीफ में मशग़ूल रहते और सैयद साहब को बिठा कर बहुत देर तक बातें करते रहे जिसमें सैयद साहब की परेशानी और निदामत दूर हो, पहले तो सैयद साहब ख़िफत के मारे ख़ामोश रहे फिर माज़रत की और अपनी लाइल्मी ज़ाहिर की कि मुझे ज़नाना मकान होने का कोई इल्म न था, आला हज़रत ने फ़रमाया कि हज़रत यह सब तो आपकी बांदियाँ हैं आप आक़ा और आक़ा ज़ादे हैं माज़रत की क्या हाजत है मैं खुद समझता हूँ हज़रत इतमीनान से तशरीफ रखें, गर्ज़ बहुत देर तक सैयद साहब को वहीं बिठा कर उनसे बात चीत की, कुछ मंगवाया, उनको खिलाया, जब देखा कि सैयद साहब के चेहरा पर आसार निदामत नहीं हैं और सैयद साहब ने इजाज़त चाही, साथ-साथ तशरीफ लाए और बाहर के फाटक तक पहुंचा कर उनको रुख़सत फरमाया वह दस्त बोस होकर रुख़सत हुए

अजब इत्तिफाक़ कि वह वक़्त मदरसा का था और रहमुल्लाह ख़ाँ ख़ादिम भी बाज़ार गए हुए थे, कोई शख़्स बाहर कमरा पर न था जो सैयद साहब को मकान के ज़माना हो जाने की ख़बर देता, जनाब सैयद साहब ने इस वाक़िआ को खुद मुझ से बयान फरमाया और मज़ाक से कहा कि हमने तो समझा कि आज खूब पिटे मगर हमारे पठान ने वह इज़्ज़त व क़द्र की कि दिल खुश हो गया वाक़ई जब मोहब्बतें आले रसूल हो तो ऐसी हो।" (हयाते आला हज़रत)

हज़रत जुनैद बग़दादी और सैयद साहब

सुल्तानुल आरफीन इमाम औलिया हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी ﷺ (297 हि०) सरकार गौस आज़म ﷺ और हज़रत दाता गंज बख़्श ﷺ के मशाइख़-ए-तरीक़त में से हैं। उनके मुतअल्लिक़ एक रिवायत यह भी है कि वह शुरू में पहलवान थे। फिर मशाइख़ -ए-तरीक़त इमाम सूफिया किराम के पेशवा कैसे बने। ज़रा दिल के तवज्जह के साथ इस वाक़िआ को मुलाहिज़ा फरमाएं:

जुनैद नामी बग़दाद के बादशाहे वक़्त के दरबारी पहलवान थे। वक़्त के बड़े-बड़े सूरमा इसकी ताक़त और फन का लोहा मानते थे। एक रोज़ दरबार लगा हुआ था। अराकीन सल्तनत अपनी अपनी कुर्सियों पर फरोगश थे। जुनैद भी अपने मख़सूस लिबास में ज़ीनते दरबार थे कि एक चौबदार ने आकर इत्तिला दी। सहन के दरवाज़े पर एक लाग़र व नीम जान शख़्स खड़ा है। सूरत व शक्ल की पर गंदगी और लिबास व पीराहन की शिकस्तगी से वह एक फक़ीर मालूम होता है। ज़ईफ व नक़ाहत से क़दम डगमगाते हैं, ज़मीन पर खड़ा रहना मुश्किल है लेकिन इसकी आवाज़ के तैवर और पेशानी की शिकन से फातिहाना किरदार की शान टपकती है। आज सुबह से वह

बराबर इसरार कर रहा है मेरा चैलेंज जुनैद तक पहुंचा दो मैं इससे कुश्ती लड़ना चाहता हूँ क़िला पासबान हर चंद उसे समझाते हैं लेकिन वह बज़िद है कि इसका पैग़ाम दरबार शाही तक पहुंचा दिया जाए।

कुश्ती के मुक़ाबले के लिए दरबार शाही से तारीख और जगह मुतअय्यन कर दी गई महकमा नश्र व इशाअत के एहलकारों को हुक्म सादिर हुआ कि सारी ममलिकत में उसका ऐलान कर दिया जाए।

अब वह शाम आ गई थी जिसकी सुबह तारीख का एक एहम फैसला होने वाला था। आफताब डूबते-डूबते कई लाख आदमियों का हुजूम बग़दाद शरीफ में हर तरफ मंडला रहा था। सुबह होते ही शहर के सबसे वसी मैदान में नुमायाँ जगहों पर क़ब्जा करने के लिए तमाशाइयों का हुजूम आहिस्ता आहिस्ता जमा होने लगा। खुदाम व हश्म के साथ हज़रत जुनैद भी बादशाह के हमराह तशरीफ लाए। सब आ चुके थे। अब इस अजनबी शख़्स का इंतिज़ार था जिसने चैलेंज देकर सारे इलाक़े में तहलका मचा दिया था। चंद ही लम्हे के बाद जब गर्द साफ हुई तो देखा गया कि एक नहीफ व लाग़र इंसान पसीने में शराबोर हांपते हांपते चला आ रहा है। मजमा क़रीब होने के बाद आसार व क़राइन से लोगों ने पहचान लिया कि यह वही अजनबी शख़्स है जिसका इंतिज़ार हो रहा था।

दंगल का वक़्त हो चुका था। ऐलान होते ही हज़रत जुनैद तैयार होकर अखाड़े में उतर गए। वह अजनबी शख़्स भी कमर कस कर एक किनारे खड़ा हो गया। लाखों तमाशाइयों के लिए बड़ा ही हैरत अंगेज़ मंज़र था। फटी आंखों से सारा मजमा दोनों की नक़ल व हरकत देख रहा था हज़रत जुनैद ने ख़म ठोंक कर ज़ोर आज़माई के

लिए पंजा बढ़ाया इस अजनबी शख़्स ने दबी ज़बान से कहा: ''जुनैद! कान क़रीब लाइए मुझे आपसे कुछ कहना है।'' मैं कोई पहलवान नहीं हूँ, ज़माने का सताया हुआ एक आले रसूल हूँ, सैयदा फातिमा का एक छोटा सा कुंबा कई हफतों से जंगल में पड़ा हुआ फाक़ों से नीम जान है, सैयदानियों के बदन पर कपड़े भी सलामत नहीं हैं कि वह घनी झाड़ियों से बाहर निकल सकें, छोटे-छोटे बच्चे भूक की शिद्दत से बेहाल हो गए हैं। हर रोज़ सुबह को यह कह कर शहर आता हूँ कि शाम तक कोई इंतिज़ाम करके वापिस लौटूंगा। लेकिन ख़ान्दानी ग़ैरत किसी के आगे मुंह नहीं खोलने देती। गिरते पड़ते बड़ी मुश्किल से आज यहाँ तक पहुंचा हूँ। चलने की सकत बाक़ी नहीं है। मैंने तुम्हें सिर्फ इस उम्मीद से चैलेंज दिया था कि आले रसूल की जो अक़ीदत तुम्हारे दिल में है, आज इसकी आबरू रख लो, वादा करता हूँ कि कल मैदान क़यामत में नाना जान से कह कर तुम्हारे सर पर फतह की दस्तार बंधवाउंगा।''

अजनबी सैयद के यह चंद जुमले नश्तर की तरह जुनेद के जिगर में पैवस्त हो गए पलकें आंसुओं के तूफान से बोझल हो गईं, इश्क़ व ईमान का सागर मौजों के तलातुम से ज़ैर व ज़बर होने लगा। आज कौनेन का सरमदी ऐज़ाज़ सर चढ़ कर जुनैद को आवाज़ दे रहा था आलमगीर शोहरत व नामूस की पामाली के लिए दिल की पेशकश में एक लम्हे भी ताख़ीर नहीं हुई। बड़ी मुश्किल से हज़रत जुनैद ने जज़्बात की तुग़यानी पर क़ाबू हासिल करते हुए कहा। ''किशवर अक़ीदत के ताजदार! मेरी इज़्ज़त व नामूस का इससे बेहतरीन मसरफ और क्या हो सकता है कि उसे तुम्हारे क़दमों की उड़ती हुई ख़ाक पर निसार कर दूँ चिमनिस्तान कुद्दस की पज़मर्दा कलियों की शादाबी के लिए अगर मेरे जिगर का खून काम आ सके

तो उसका आख़री क़तरा भी तुम्हारे नक़्श पा में ज़ज़्ब करने के लिए तैयार हूँ। बस इस आस पर कि कल मैदान महशर में सरकार अपने नवासों के ज़रख़रीद गुलामों की क़तार में खड़े होने की इजाज़त मरहमत फरमाऐं।

इतना कहने के बाद हज़रत जुनैद ख़म ठोंक कर ललकारते हुए आगे बढ़े सचमुच कुश्ती लड़ने के अंदाज़ में थोड़ी देर पैंतरा बदलते रहे। सारा मजमा नतीजे के इंतिज़ार में साकत व ख़ामोश नज़र जमाए देखता रहा। चंद ही लम्हे के बाद हज़रत जुनैद ने बिजली की तेज़ी के साथ एक दाओ चलाया। दूसरे ही लम्हे जुनैद चारों खाने चित थे और सीने पर सैय्यदा का एक नहीफ व नातवाँ शहज़ादा फतह का परचम लहरा रहा था।

हैरत का तिलसम टूटते ही मजमा ने नहीफ व नातवाँ सैयद को गोद में उठा लिया मैदान का फातेह अब सिरों से गुज़र रहा था और हर तरफ से इनाम व इकराम की बारिश हो रही थी। शाम तक फतह का जुलूस सारे शहर में गश्त करता रहा। रात होने से पहले एक गुमनाम सैयद ख़लअत व इनामात का बेश बहा ज़ख़ीरा लेकर जंगल में अपनी पनाहगाह की तरफ लौट चुका था।

हज़रत जुनैद अखाड़े में इसी शान से चित लेटे हुए थे। अब किसी को हमदर्दी उनकी ज़ात से नहीं रह गई थी हर शख़्स उन्हें पाएं हिक़ारत से ठुकराता और मलामत करता हुआ गुज़र रहा था। उम्र भर मदरह व सताइश का ख़िराज वसूल करने वाला आज ज़हर में बुझे हुए तानों और तौहीन आमेज़ कलमात से मसरूर शाद हो रहा था।

हुजूम ख़तम हो जाने के बाद ही उठे और शाहराम् आम से गुज़रते हुए अपने दौलत ख़ाने पर तशरीफ ले गए। आज की शिकस्त

की ज़िल्लतों का सरवरान की रूह पर एक खुमार की तरह छा गया था। उम्र भर की फातिहाना मुसर्रतें वह अपनी नंगी पीठ के निशानात पर बिखेर आते थे।

हज़रत जुनैद की पुरनम आंखों पर नींद का एक हल्का सा झोंका आया और वह खाकदान गीती से बहुत दूर एक दूसरी दुनिया में पहुंच गए। आलम बेखुदी में हज़रत जुनैद, सुल्तान कौनैन ﷺ के क़दमों से लिपट गए। सरकारे दो आलम ﷺ ने रहमतों के हुजूम में मुस्कुराते हुए फरमायाः

जुनैद! उठो क़यामत से पहले अपने नसीबे की सरफराज़ियों का नज़ारा कर लो। नबी ज़ादों के नामों के लिए शिकस्त की ज़िल्लतों का इनाम तक कर्ज़ नहीं रखा जाएगा। सर उठाओ! तुम्हारे लिए फतह व करामत की दस्तार लेकर आया हूँ। आज से तुम्हें इरफान व तक़रीब की सबसे ऊँची बिसात पर फाइज़ कियागया। तजल्लियात की बारिश में अपनी नंगी पीठ को गुबार और चेहरे के गर्दन का निशान धो डालो। अब तुम्हारे रुखे ताबाँ में खाकदान गीती ही के नहीं आलमे कुद्दस के रहने वाले भी अपना मुंह देखेंगे। दरबार यज़दानी से गिरोह औलिया की सरवरी का ऐज़ाज़ तुम्हें मुबारक हो।''

इन कलमात से सरफराज़ फरमाने के बाद सरकार मुस्तफा ﷺ ने हज़रत जुनैद को सीने से लगाया। इस आलम कैफ बार में अपने शहज़ादों के जान निसार परवाने को क्या अता फरमाया उसकी तफ्सील नहीं मालूम हो सकी। जानने वाले बस इतना ही जान सके कि सुबह को जब हज़रत जुनैद की आंख खुली तो पेशानी की मौजों में नूर की किरन लहरा रही थी। आंखों से इश्क़ व इरफान की शराब के पैमाने झलक रहे थे, दिल की अंजुमन तजलियात का गहवारा बन चुकी थीं, लबों के जुंबिश पर कारकुनान कज़ा व क़द्र के पहरे बिठा

दिये गए थे, गैब व शहूद की सारी कायनात शफाफ आईने की तरह तार नज़र की गिरफ्त में आ गई थी। नफ्स-नफ्स में इश्क़ व यक़ीन की दहकती हुई चिंगारी फूट रही थी, नज़र-नज़र में दिलों की तसखीर का सहरे हिलाल अंगड़ाई ले रहा था।

ख्वाब की बात बादे सबा ने घर-घर पहुंचा दी थीं, तुलूअ़ सहर से पहले ही हज़रत जुनैद के दरवाज़े पर दुरवैशियों की भीड़ जमा हो गई थी। जूंही बाहर तशरीफ लाए ख़िराजे अक़ीदत के लिए हज़ारों गर्दनें झुक गईं, बादशाह बग़दाद ने अपने सर का ताज उतार कर क़दमों में डाल दिया। सारा शहर हैरत व पशेमानी के आलम में सर झुकाए खड़ा था। मुस्कुराते हुए एक बार नज़र उठाई और हैबत से लरज़ते हुए दिलों को सुकून बख़्श दिया। पास ही किसी गोशे से आवाज़ आई। ''गिरोह औलिया की सरवरी का ऐज़ाज़ मुबारक हो।'' मुंह फैर कर देखा तो वही नहीफ व नज़ार आल रसूल फर्त खुशी से मुस्कुरा रहा था। सारी फिज़ा ''सैयदुल ताईफा'' (सूफिया की जमाअत के सरदार) की मुबारकबाद से गूंज उठी। (अलिफ व ज़ंजीर अज़ अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलै. स. 81)(ज़ैनुल बरकात)

यह कहानी नहीं हकीक़त है और हकीक़त आशना वह ही हो सकते हैं जिनके दिल में आले रसूल ﷺ की मुहब्बत की चिंगारी सुलग रही है।

गुलिस्ताने ज़ेहरा के सरसब्ज़ व शादाब फूल

सूरः कौसर की तफ्सीर में शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद अशरफ सियालवी मद्दज़िल्लहू दरबार एहले बैत में यूँ गुलहाए अक़ीदत पेश करते हैंः

''इस आयत पाक में ''अल् कौसर'' से मुराद औलाद पाक

और नसल अतहर है और महबूब पाक ﷺ को बशारत दी गई है कि आपकी नसल पाक बेहद व हिसाब होगी और तमाम क़बाईल व अक़वाम से ज़्यादा होगी। कोई क़बीला और क़ौम गिंती व शुमार और फज़ाईल व कमालात के लिहाज़ से उनकी बराबरी नहीं कर सकेगी।

जब हुज़ूर नबी अकरम ﷺ के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह ؓ विसाल फरमा गए तो कफ्फार व मुशरीकीन ने आपको ''अबतर'' कहना शुरू कर दिया। उनका गुमान यह था कि पैग़ंबर इस्लाम की औलाद सुलैबी नहीं जो कि उनकी क़ायम मुक़ाम हो और उनके दीन व मज़हब को जारी रख सके लिहाज़ा यह सिलसिला ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रह सकेगा और यह मज़हब बहुत जल्द ख़त्म हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत करीमा में कुफ्फार व मुशरीकीन और मआंदीन के इस वाहमा को ज़ाइल फरमाया और महबूब व मतलूब ﷺ को बशारत दी कि ऐ मेरे रसूल ﷺ! मैंने आपको इतनी औलाद अता फरमाई है कि वह क़यामत तक ख़तम न होगी और यह मसलक व मज़हब और दीने मिल्लत उनके फयूज़ व बरकात से हमेशा क़ायम व दायम रहेगा। उनकी मुख़लिसाना और बेलोस मसाई जमीला से दीन इस्लाम का पौधा हमेशा तरोताज़ा और सरसब्ज़ व शादाब रहेगा।

इस ग़ैबी ख़बर की सदाक़त और हक़ानियत का अंदाज़ा कीजिए और पैग़ंबर आख़िरुज़्ज़माँ अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इस मोजज़ा की वाकिईयत और हक़ीक़त को मुलाहिज़ा कीजिए, वह गुस्ताख़ व बेअदब और ताना ज़न कुफ्फार नैस्त व नाबूद हो गए, लेकिन दुनिया का कोई ख़ित्ता ऐसा न होगा जहाँ आँहुज़ूर शाफे यौमुन्नुशूर अलैहिस्सलाम की औलाद पाक और सादात किराम मौजूद

न हों। वह दुश्मनों जिन्होंने ने एहले बैत को दुनिया से मिटाने की कोशिश की, वह खुद मिट गए लेकिन एहले बैत को न मिटा सके, आज न यज़ीद हे, न इब्ने ज़्यादा, न उनका नाम व निशान।

लेकिन एक आबिद बीमार हज़रत सैयद इमाम ज़ैनुल आबिदीन ؓ की नस्ले अक़्दस में अल्लाह तआ़ला ने वह बर्कत अता फरमाई कि तमाम ऐतराफ व अक्नाफ आलम में यह नूरी नसल फैली हुई है और शफी मुअज़्ज़म ﷺ के आफताब हुस्न व जमाल की यह नूरानी किरनें एहले जहाँ के दिलों को मुनव्वर किये हुए हैं और तमाम आलम के लिए सरचश्मा-ए-रुश्द व हिदायत बनी हुई हैं।) (ज़ैनुल बरकात)

या अल्लाह! सादात की नसल में बरकत फरमा

जिस रात हज़रत सैयदा फातिमा ज़ेहरा ؓ की शादी हज़रत सैयदना अली उल मुरतज़ा ؓ से हुई। आप ﷺ ने पानी मंगवाया वज़ू किया और हज़रत फातिमा पर उंडेल दिया और फरमाया:

ऐ अल्लाह तआ़ला इसमें बर्कत दे। इस पर अपनी बर्कत नाज़िल फरमा और उन दोनों की नस्ल में बर्कत दे।'' (علــمـــوا اولادكم محبة رسول الله صفحه ٧٠)

अल्लाह तआला ने सादात किराम की नसल में कितनी बरकत फरमाई

मुलाहिज़ा फरमाऐं।

1. हिन्द में सादात-ए-किराम की तादाद : 7 मिलियन
2. पाक में सादात-ए-किराम की तादाद : 8 मिलियन
3. बंगला देश में सादात-ए-किराम की तादाद : 1 मिलियन
4. नेपाल में सादात-ए-किराम की तादाद : 70 हज़ार
5. युरोप में सादात-ए-किराम की तादाद : 2 मिलियन

6. अफरीक़ा में सादात-ए-किराम की तादाद : 1 लाख
7. अमरिका में सादात-ए-किराम की तादाद : 7 मिलियन

अब आप अंदाज़ा लगाऐं कि पूरी दुनिया में सादात-ए-किराम की तादाद कितनी होगी।

☆☆☆

نحمدہ ونصلی علی حبیبہ الکریم۔ زیر نظر کتاب مستطاب
برکات السادات فی تحقیق نسب النور جو فضائل سادات کرام
سے متعلق ہے جو نہایت ہی عمدہ ہے، یہ میں عزیزم محمد ذیشان قادری
نے تحریر فرمایا ہے در حقیقت یہ انکی کاوش علم کا نتیجہ ہے جو اپنے
موضوع اور طرز تحریر کے لحاظ سے بالکل نادر کتاب ہے جس میں سادات
کرام کے فضائل ومناقب کو اچھوتے انداز میں دلائل واحادیث
سے مزین فرمایا اور انجان وجاہل قوم کو یہ باور کرایا کہ اولاد رسول
کی حیثیت کیا ہے اور آج لوگ اہل سادات کو کس نظریہ سے
دیکھ رہے ہیں حالانکہ اہل سادات کیسے بھی کیوں نہ ہو وہ ہمیشہ
ہمارے لئے لائق تعظیم ہیں فقیر محمد منظم قادری ازہری کا سلسلہ بارگاہ
سادات سے جڑا ہے میں نے کتاب کا استیعاب مطالعہ کیا واقعی آج کے اس
پرفتن ماحول میں سادات کرام کی عظمت لوگوں کے دلوں میں
جاگزیں کرنے کیلئے اپنی مثال آپ ہے اللہ تعالی سے دعا ہے
عزیزم محمد ذیشان قادری کے علم وعزم میں مزید استحکام عطا فرمائے
اور لوگوں کیلئے اس کتاب کو مشعل راہ بنائے آمین بجاہ
سید المرسلین

فقیر ابو الفیضان محمد منظم قادری ازہری
خادم وبانی حنفی دار الافتاء دہلی
مورخہ ۲۶ ربیع الاول شریف ۱۴۳۷ھ

नाशिर

ख़ानक़ाह -ए- हैदरी

गली न०, 2, कल्यान, दिल्ली - 110053

फोन न० : 9968423172

Designed By : CREATIVE ARTS : 9999226181